'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में दाम्पत्य चित्रण

पवित्रा देवी

सारांश

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है वह अब रूढ़िवादी रूपी परम्पराओं की बेड़ियाँ अब पूर्णतः उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजे मिथ्या है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह युगों से इन बेड़ियों को उतार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कालिया जैसी प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – "घर का पुरुष भले ही कायदा का कद्दू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिंग, फोन, औपचारिक–अनौपचारिक, मुलाकातें उसकी दिनचर्या के अंग है। हर मोर्चे पर वह सनद की भाँति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मीम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।"

स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है– जितनी तृप्ति इस एक सत में मिली है। बोली कि मानें?किसको दूं महत्त्व?(उसकी ओर देखती रहती है। एक और बढ़ती है, धीरे–धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कहीं कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़–फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन – सी शैया पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान ला कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (चूड़ियाँ और आभूषण खनखनाते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को सम्भालने की चेष्टा करती है उमंग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।"

'भारतीय समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित है।"

डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – "हिन्दी कहानियों में ऐसे पति–पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण बलदेव वैद) और विश्राम (कुलभूषण) आदि कहानियाँ [illegible] साथ यौन सम्बन्ध नहीं वह शादी से पूर्व हो या शादी के [illegible] सहजता से लिया गया है। मिकोफ में पत्नी को पर [illegible] एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन [illegible] सम्भावना बनती है।"

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह [illegible] लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण, ईमानदारी [illegible] नहीं दे पाता तो उसे यह सब भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। [illegible] अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक [illegible] उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैहिक [illegible] रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं से दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी कोमल रूप से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी [illegible] रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति–पत्नी की अभिरुचियाँ साथ नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुसक प्रवृति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ चूर–चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नहीं होती और दोनों पात्र को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।

शीलवती (आवेश से) निभाती है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए बस पति ओक्काक

Scanned with OKEN Scanner

सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटक में दाम्पत्य चित्रण

पवित्रा देवी

सारांश

[illegible]

[illegible]

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।
शीलवती (आवेश से) मिलती है मन और शरीर की एक मर्यादा [illegible]
में उतना सन्तोष नहीं मिला।

[illegible]

13

'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में दाम्पत्य चित्रण

पवित्रा देवी

साराश

वर्तमान समाज मे नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णत आत्मनिर्भर हो गई है. वह अब रूढ़िवादी रूपी परम्पराओ की बेड़ियाँ अब पूर्णत. उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धो को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजे मिथ्या है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह युगो से इन बेड़ियो को उतार फेकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ मे ममता कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – "घर का पुरुष भले ही काउच का कद्दू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह सचालन मे लगा देती है। बीच मे नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिग, फोन, औपचारिक–अनौपचारिक, मुलाकते उसकी दिनचर्या के अग है। हर मोर्चे पर वह मनट की भाँति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मौम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।"

स्त्री–पुरुषो के सम्बन्धो पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है– जितनी तृप्ति इस एक रात मे मिली है। बोलो कि मानूँ?किसको दूँ महत्व?(उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीरे–धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लावा जो कितने सालो से इस शरीर मे दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कही कुछ नही भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नही मिलता था, चित्रलिख फाड़–फाड़कर फेकती थी, द्रुत रागो मे वीणा के तार टूटते थे, बेचैन – सी शैया पर करवटे बदलती थी (एक पंजा बढाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (चूड़िया और आभूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणो के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पडती है। अपने को सभालने की चेष्टा करती है उमग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।"

"भारतीय समाज मे स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित है।"

डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – 'हिन्दी कहानियो मे ऐसे पति–पत्नियो के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति मे वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते है। ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियो पर पर–पुरुष के साथ यौन–सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद अत्यन्त सहजता से लिखा गया है। 'मिकोफ' मे पत्नी को पर –पुरुष के साथ एकान्त मे देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन भाव संभावना बनती है।"

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूजा लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण, ईमानदारी ये सारे भाव नही दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नही है। नारी अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिशत उसके प्रति समर्पित नही होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार भी हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योकि नारी बड़ी ही संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओ के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पडती है। अगर नारी कोमल भाव से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूर्ण रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश मे दाम्पत्य सम्बन्धों मे मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे है। अगर पति–पत्नी की अभिरूचियाँ, सोच नही मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धो मे मनमुटाव होने लगता है क्योकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नही कर पा रहा है तो स्त्री मे कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओ को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुसक प्रवृति का है तो उसकी सारी इच्छाएं चूर–चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक मे शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नही होती और दोनो पात्र को समाज की बातो को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक (तीव्र स्वर मे) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।

शीलवती (आवेश से) निभायी है मैने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने मे उतना सन्तोष नही मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक मे शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नही मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक

Scanned with OKEN Scanner

सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में दाम्पत्य चित्रण

13

पवित्रा देवी

सारांश

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है, वह अब रूढ़िवादी सभी परम्पराओं की बेड़ियाँ अब पूर्णतः उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजें मिथ्या है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह युगों से इन बेड़ियों को उतार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – 'घर का पुरुष भले ही कानून का कद्दू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिंग, फोन, औपचारिक–अनौपचारिक, मुलाकातें उसकी दिनचर्या के अंग है। हर मोर्चे पर वह गनर की भाँति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे भोग मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।'[1]

स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है– जितनी तृप्ति इस एक रात में मिली है। बोलो कि मानूँ?किसको दूँ महत्व?(उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है धीरे–धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कहीं कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़–फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन – सी शैया पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (चूड़ियाँ और आभूषण खनखनाते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को सम्भालने की चेष्टा करती है उमंग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।'[2]

'भारतीय समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित है।'[3]

डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – 'हिन्दी कहानियों में ऐसे पति–पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियों पर पर–पुरुष के साथ यौन–सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद अत्यन्त सहजता से लिखा गया है। 'मिकोफ' में पत्नी को पर –पुरुष के साथ एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन धारणा की संभावना बनती है।'[4]

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूजा लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समपर्ण, ईमानदारी, ये सारे भाव नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। नारी अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिशत उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार भी हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी ही संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी कोमल भाव से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूर्ण रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे है। अगर पति–पत्नी की अभिरूचियाँ, सोच नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है, क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ चूर–चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।

शीलवती (आवेश से) निभायी है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला.

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीज़ों के लिए उस पति ओक्काक

13 'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में दाम्पत्य चित्रण

पवित्रा देवी

सारांश

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है, वह अब रूढ़िवादी रूढ़ी परम्पराओं की बेड़ियाँ अब पूर्णतः उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि नारी सीधे पिसता है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह युगों से इन बेड़ियों को उतार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कालिया जैसी प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – "घर का पुरुष भले ही काठ का कद्दू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिंग, फोन, औपचारिक–अनौपचारिक मुलाकातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह गनर की भाँति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मौन मनुहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।"

स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है– जितनी तृप्ति इस एक रात में मिली है। बोलो कि मानूँ?किसको दूँ महत्व?(उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीरे–धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कहीं कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़–फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन –सी शैया पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (चूड़ियाँ और आभूषण खनखनाते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को संभालने की चेष्टा करती है उमंग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।"[7]

"भारतीय समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित है।"[8]

डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – "हिन्दी कहानियों में ऐसे पति–पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियों पर ... साथ यौन–सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद ... सहजता से लिखा गया है। 'गिरोफ' में पत्नी को पर–पुरुष के ... एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन ... संभावना बनती है।"[9]

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह ... लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण, ईमानदारी ... नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है ... अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष ... उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी कोमल रूप से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी ... रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे है। अगर पति–पत्नी की अभिरुचियाँ साथ नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुसक प्रवृति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ चूर–चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नही होती और दोनो पात्र को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक :(तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।

शीलवती :(आवेश से) निभायी है मैने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नही मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक

13

'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में दाम्पत्य चित्रण

पवित्रा देवी

सारांश

वर्तमान समाज मे नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णत आत्मनिर्भर हो गई है. वह अब रूढिवादी रूपी परम्पराओं की बेडियाँ अब पूर्णत उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धो को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजे मिथ्या है जो उसके अस्तित्व को बढने से रोकती है। वह युगों से इन बेडियों को उतार फेंकने के लिए तडप रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ मे ममता कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – "घर का पुरुष भले ही काउच का कद्दू बना रहे स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन मे लगा देती है। बीच मे नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिंग, फोन औपचारिक–अनौपचारिक, मुलाकाते उसकी दिनचर्या के अंग है। हर मोर्चे पर वह गनट की भाँति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मौम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।"

स्त्री–पुरुषो के सम्बन्धो पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है– जितनी तृप्ति इस एक रात मे मिली है। बोलो कि मर्नु?किसको दूँ महत्व?(उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढती है, धीरे–धीरे) उसके एक स्पर्श से भडक उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कही कुछ नही भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नही मिलता था, चित्रलिख फाड–फाडकर फेंकती थी, द्रुत रागो में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन – सी शैया पर करवटे बदलती थी (एक पजा बढाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (चूडिया और आभूषण खनखानते है तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणो के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पडती है। अपने को सभालने की चेष्टा करती है उमग से) बहुत अनुभवी है प्रताप जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।"

"भारतीय समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित है।"

डॉ0 वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – "हिन्दी कहानियों मे ऐसे पति–पत्नियो के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते है। ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियो पर पर–पुरुष के साथ यौन–सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद अत्यन्त सहजता से लिखा गया है। 'त्रिकोण' मे पत्नी को पर –पुरुष के साथ एकान्त मे देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन धारणा संभावना बनती है।"

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूजन लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण, ईमानदारी ये सारे भाव नही दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नही है। नारी अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिशत उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार भी हो जाती है, जितनी चुप है उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बडी ही संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पडती है। अगर नारी कोमल भाव से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी मे पूर्ण रूप से डूबती है तो उतना ही बडा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश मे दाम्पत्य सम्बन्धों मे मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे है। अगर पति–पत्नी की अभिरूचियाँ, सोच नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों मे मनमुटाव होने लगता है, क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नही कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुसक प्रवृति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ चूर–चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक मे शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नही होती और दोनो पात्र को समाज की बातों को मानना पडता है परन्तु ज्यादा पीडित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक :(तीव्र स्वर मे) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।

शीलवती :(आवेश से) निभायी है मैने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने मे उतना सन्तोष नही मिला.

इन सम्बन्धो को चित्रण इस नाटक मे शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नही मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक

Scanned with OKEN Scanner